अदम्य चेतना के तत्वावधान में 1 जनवरी 2017 को बंगलौर में आयोजित अदम्य चेतना सेवा उत्सव में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

''बेन्गळूरिन नन्न प्रीतिय सहोदर सहोदरियरे, मत्तु मुद्दु मक्कळे, निमम एल्लारिगू नन्न नमस्कारगळु ।। निम्मेल्लरिगू होस वर्षद हार्दिक शुभाशयगळु ।।''

(My greetings to my brothers, sisters and children of Bengaluru. New year greetings to you all)

1. अदम्य चेतना सेवा उत्सव 2017 के उपलक्ष्य में आज आप सबके बीच आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। माननीय श्री अनंत कुमार जी के संरक्षण में गत 19 वर्षों से यह स्वयंसेवी संस्था के रूप में निरंतर समाज के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। इसकी स्थापना सन् 1997 में माननीय अनंत कुमार जी की माता जी आदरणीय श्रीमती गिरिजा नारायण शास्त्री की स्मृति में की गई है, जिन्होंने गरीबों एवं हाशिए पर रह रहे लोगों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। अब इस संस्था का कार्य उनकी पुत्रवधू डॉ. तेजस्विनी अनंत कुमार जी उसी प्रकार कुशलता से संभाल रही हैं। उन्होंने मुझे अदम्य चेतना सेवा उत्सव 2017 में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया, इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देती हूं।

2. ''अदम्य चेतना'' भारत के भविष्य को बेहतर बनाने के संकल्प को पूरा करने के लिए हर साल सेवा उत्सव का आयोजन करती रही है। विकास को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिकों, मशहूर हस्तियों और विद्वानों को संगठित करना और बच्चों को प्रेरित करना बहुत अच्छा प्रयास है। मैं आपकी अन्न–अक्षर–आरोग्य की धारणा से बहुत प्रभावित हुई हूँ। इस परमार्थ संस्था का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों तक ''अन्न, अक्षर और आरोग्य'' पहुंचाना हैं। यह संस्था महिला और बाल विकास, सुन्दर एवं स्वच्छ पर्यावरण एवं गांवों के सतत् विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

3. इस संगठन ने लाखों बच्चों को भोजन और स्वास्थ्य के साथ–साथ पढ़ाई–लिखाई को बढ़ावा देने की दिशा में उत्कृष्ट कार्य किया है, इसके लिए मैं संस्था एवं इसके संरक्षक श्री अनंत कुमार जी को बधाई देती हूँ। विविध कल्याणकारी

कार्यकलापों के माध्यम से तय की गई लगभग दो दशक लंबी यात्रा वास्तव में एक असाधारण उपलब्धि है। इस संगठन ने बच्चों के लिए मीड डे मील स्कीम का बेहतर ढंग से क्रियान्वयन किया है और बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के साथ–साथ, रसोईघर के बेहतरीन प्रबंधन का नमूना प्रस्तुत किया है। कर्नाटक में बेंगलुरू, हुब्बली, धारवाड़, कालबुर्गी एवं हरिहर के साथ–साथ राजस्थान के जोधपुर में भी यह संस्था लगभग 2 लाख स्कूली विद्यार्थियों को भोजन उपलब्ध करा रही है।

4. यह भी उल्लेखनीय है कि पर्यावरण को अनुकूल बनाने एवं साफ–सफाई के उद्देश्य से पिछले छह साल से अदम्य चेतना द्वारा fossil free fuel एवं garbage free kitchen का उपयोग कर रही है। इन्होंने ऐसी व्यवस्था भी विकसित की है जिससे रसोईघर में निकलने वाले कुड़े–कचरे का उपयोग कम्पोस्ट बनाने में किया जा सके। इनकी fossil free fuel एवं garbage free kitchen की अवधारणा भी आदर्श साबित हो सकती है और हम इससे सीख लेकर सरकारी कैंटीनों सहित हर जगह इसका उपयोग कर सकते हैं।

5. पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर उनका नजरिया भी सराहनीय है। वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के लिए एक व्यक्ति के लिए एक पेड़ लगाने का उनका विचार तथा गांवों में प्लास्टिक के उपयोग को नियंत्रित करने में उनका सहयोग उल्लेखनीय है। साथ ही, रसोईघर में प्रयुक्त हुए waste water का पार्कों में लगे पेड़–पौधों को सींचने में उपयोग करने की उनकी अवधारणा बहुत अच्छी है एवं इससे पर्यावरण के साथ–साथ जल का भी बेहतर उपयोग सुनिश्चित होता है। Reduce, Reuse, Recycle पर्यावरण के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

6. जहां तक इस उत्सव का प्रश्न है, इसकी थीम **''सुजलां सुफलां मातरम् वन्दे''** सर्वथा उपयुक्त एवं प्रासंगिक है। हमारे देश में साहित्य व संस्कृति व हमारी परम्पराओं में जल की महत्ता को समझकर उसके संरक्षण के लिए बहुविविध प्रयास किए जाते रहे हैं। जल किसी भी सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। बिना इसके हरे–भरे खेतों, खलिहानों, वृक्षों, बागों, उपवनों और वनों की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः, इनके संरक्षण के लिए हमें नए और पुराने हर तकनीक का उपयोग करना चाहिए। यदि हम इनका संरक्षण करेंगे, तो ये निश्चित रूप से हमारा रक्षण करेंगी।

7. यजुर्वेद में कहा गया हैः **''मायो मौष धीहि ऊं सीर्घाम्नोः राजस्तो वरूण नो मुंच''**। अर्थात् हे राजन्! आप अपने राज्य के स्थानों में जल व वनस्पति को हानि न पहुंचाओ, ऐसा उद्यम करो जिससे हम सभी को जल एवं वनस्पतियां सतत् रूप में प्राप्त होती रहे। सुश्रुत संहिता का 45वां अध्याय पेयजल पर लिखा गया है। ''जल ही जीवन है'', यही प्रकृति का सिद्धान्त है। जल के औषधीय गुणों की चर्चा, इसकी गुणवत्ता व संरक्षण की बार–बार वकालत की जाती है। जहां हमारे पास दुनिया की आबादी का 16 प्रतिशत है वहीं दुनिया के जल संसाधनों का 4 प्रतिशत और दुनिया के भूभाग का 2.45 प्रतिशत ही हमारे पास उपलब्ध है। बढ़ती जनसंख्या के मद्देनज़र उपलब्ध जल एवं भूमि संसाधनों का सीमित उपयोग, संरक्षण करना एवं उसे संजोकर रखना हम सबकी जिम्मेदारी है।

8. हमारा देश कृषि प्रधान देश है। गांव व खेती, ये दो विषय हमारी भारतीय संस्कृति की नींव हैं। खेती को उत्कृष्ट करके, गांव को स्वावलम्बी बनाकर हम एक विकसित भारत का स्वप्न सच कर सकते हैं। जल और अन्न का घनिष्ठ रिश्ता है। जल आपूर्ति सुचारू होगी तभी अन्न की पैदावर होगी। जल आधारित उद्योगों में कृषि और मत्स्यपालन के साथ ऊर्जा क्षेत्र भी सम्मिलित है। जैसे जैसे ऊर्जा की मांग बढ़ रही है वैसे–वैसे जल की खपत भी बढ़ रही है। साथ ही, वस्त्र, चमड़ा, कागज, रबड़, प्लास्टिक एवं दवा उद्योग में भी जल का व्यापक उपयोग होता है। जल की अपनी एक अर्थव्यवस्था भी है। उस अर्थव्यवस्था को सतत् विकसित किए जाने की आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखकर सरकार अंतर्देशीय जल परिवहन मार्ग विकसित करने की बात कर रही है। इससे रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे और व्यापार के खर्च में कमी भी आएगी।

9. जल का अधिकार वास्तव में जीवन के मूल अधिकारों में से एक है। परंतु, Waste disposal के लिए जल के अंधाधुंध इस्तेमाल के कारण इस महत्वपूर्ण संसाधन का अस्तित्व लगातार खतरे में पड़ रहा है। आज जल प्रदूषण गंभीर चिन्ता का विषय है। पेयजल स्रोतों को सुरक्षित और कायम रखने की जिम्मेदारी समाज और सरकार दोनों की है। सतह पर स्थित नदियों, तालाबों, झरनों, जोहड़ों, कुओं के साथ–साथ भूमिगत जल का संरक्षण बहुत आवश्यक है।

10. हम अपने कर्म और ज्ञान, दोनों से इन पंचमहाभूतों के मर्म को समझते हुए भारतीय पद्धति से जीवन जीते हैं और यही हमारी विशेषता है। हमलोगों ने प्रकृति का निरंतर

संरक्षण किया है और दुनिया को सिखाया है कि पर्यावरण संरक्षण कैसे किया जाए? हमारे धर्मग्रन्थ, हमारी जीवन पद्धति, हमारा सब कुछ पर्यावरण व सृष्टि को सहेजने के लिए है। इसीलिए तुलसी, नीम, वटवृक्ष, पीपल की हर घर में पूजा होती है।

11. इसी प्रकार, गोपालन की हमारे देश में प्राचीन परम्परा रही है। मुझे बताया गया है कि यह संगठन भी गोपालन के लिए ग्रामीण महिलाओं को ब्याजमुक्त कर्ज दे रही है। गाय को हमारी संस्कृति में धाय भी कहा गया है। उनके पालन–पोषण के लिए संगठन का प्रोत्साहन बहुत प्रशंसनीय कदम है।

12. इस अवसर पर भारत के अंतरिक्ष विज्ञान एवं रक्षा के क्षेत्र में किए गए नवीनतम अनुसंधान एवं सफलता पर आधारित एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है जो वास्तव में प्रेरित करने वाला है। ऐसे आयोजनों से विज्ञान जगत से जुड़े हमारे शिक्षाविद्, अनुसंधानकर्ता एवं हमारे विद्यार्थी सभी लाभान्वित होते हैं। तापस 201 की पहली सफल उड़ान, भारतीय वायु सेना के विमान से स्मार्ट एंटी एयरफील्ड वेपन का सफल परीक्षण तथा हाल ही में पीएसएलवी–सी 35 द्वारा एससीएटीएसएटी–I के साथ–साथ एक एकल उड़ान में सात उपग्रहों का प्रक्षेपण एवं उन्हें दो अलग–अलग कक्षाओं में स्थापित करने का कार्य हाल ही के कुछ महीनों की उल्लेखनीय उपलब्धियां रही हैं। यह प्रशंसनीय कदम है और इससे भी बहुत लोग प्रेरित हुए होंगे। मुझे इस बात की भी खुशी है कि कुछ दिन पहले ही लंबी दूरी वाले बैलिस्टिक मिसाइल, अग्नि–V का लगातार चौथी बार सफल परीक्षण किया गया। यह जमीन से जमीन पर पांच हजार किलोमीटर तक के लक्ष्य को बेहद कुशलता से भेद सकता है। इससे शोध और विकास के क्षेत्र में हमारी बढ़ती ताकत का पता चलता है। मुझे विश्वास है कि अंतरिक्ष–विमानन–रक्षा प्रदर्शनी, जिसमें हमारी तरक्की की झलक प्रस्तुत की जा रही है, इससे युवाओं में निश्चित रूप से जिज्ञासा की भावना, वैज्ञानिक जानकारी और ज्ञान की संस्कृति विकसित होगी।

13. अथर्ववेद में यह कहा गया है **''माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्यां''।** यह धरती हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। धरती माता हमारे जीवन के अस्तित्व का एक प्रमुख आधार है, हमारा पोषण करती है, इसलिए वेद आगे कहते हैं – ''हे मनुष्यो! मातृभूमि की सेवा करो। अपने राष्ट्र से प्रेम करो।'' मातृभूमि के प्रति ऐसा भाव केवल और केवल भारत

में ही है। राष्ट्र जागरण एवं स्वाभिमान के इस मंच पर आज मुझे हजारों देशवासियों के साथ वंदे मातरम् गीत का उद्घोष करने, उनके सुर में सुर मिलाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है, यह मेरा सौभाग्य है। वास्तव में मुझे गर्व एवं आनंद की अनुभूति हो रही है।

14. यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं सभी आयोजकगण का, विशेषकर अनंत कुमार जी एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. तेजस्विनी जी के प्रति आभार व्यक्त करती हूं। मैं अदम्य चेतना संगठन के सभी भावी रचनात्मक प्रयासों में सफलता की कामना करती हूँ।

धन्यवाद ।